उसे सर्वतोभावेन भगवद्भक्ति की शरण लेनी होगी।

यथार्थ में हम कर्म अपने चित्त और मनीषा के द्वारा करते हैं देह से नहीं। अतः यदि मन-बुद्धि नित्य भगवत्स्मरण के ही परायण रहें तो इन्द्रियाँ भी उनकी अनन्य सेवा में तत्पर रहेंगी। कम से कम बाह्य रूप से तो इन्द्रियों की क्रियाएँ वही रहती हैं, परन्तु मति परिणत हो जाती है। भगवद्गीता भगवत्स्मरण में मन-बुद्धि को तन्मय कर देने की विधि सिखाती है। इस तन्मयता से भगवद्धाम की प्राप्ति सुलभ है। चित्त के कृष्णसेवा-परायण हो जाने पर इन्द्रियाँ भी स्वतः उनकी सेवा में निवेशित हो जाती हैं। श्रीकृष्ण के मधुर चिन्तन में पूर्ण रूप से लीन रहना एक दिव्य कला है। यही भगवद्गीता का गोपनीय सार है।

आधुनिक मनुष्य ने चन्द्रमा तक पहुँचने के लिए घोर संघर्ष किया है; परन्तु अध्यात्म में उन्नति के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किया। जिनके जीवन के पचास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, वे तो विशेष सावधानी सहित अपने शेष सीमित समय का सदुपयोग भगवत्स्मरण के अभ्यास में ही करें। इसी अभ्यास का नाम भक्तियोग हैः

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यं आत्मनिवेदनम्।।

ये नौ साधन, जिनमें भगवत्प्राप्त महापुरुष के मुख से भगवद्गीता का श्रवण करना सबसे सुगम है, जीव को भगवच्चिन्तन की ओर उन्मुख करते हैं। इससे निश्चल भगवत्स्मरण होने लगता है और देह-त्याग के अनन्तर श्रीभगवान् का संग करने के योग्य दिव्य शरीर की प्राप्ति भी हो जाती है।

श्रीभगवान् आगे कहते हैं:

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।।

'हे कुन्तीनन्दन! नित्य-निरन्तर अनन्य भाव से भगवत्स्मरण का अभ्यास करने वाले को निःसन्देह भगवद्धाम की प्राप्ति होती है।' (गीता ८.८)

यह पद्धति कठिन नहीं है। परन्तु इसे उस अनुभवी मनुष्य से सीखना होगा, जो स्वयं इसका अभ्यास करता हो। यत्र-तत्र धावनशील चित्त को भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीविग्रह अथवा कृष्णनाम की ध्वनि में एकाग्र करने का अभ्यास करना चाहिए। मन स्वभाव से ही चंचल तथा अस्थिर है। परन्तु कृष्णनाम के प्रभाव से यह स्थिर हो जाता है। इस प्रकार 'परम पुरुष' का सतत चिन्तन करते हुए उनको प्राप्त हो जाय। भगवद्गीता में आत्यन्तिक उपलब्धि—भगवत्प्राप्ति के साधन का स्पष्ट उल्लेख है, इस ज्ञान के द्वार प्राणीमात्र के लिए खुले हैं। इसमें सबका अधिकार है। सभी कोटि के मनुष्य श्रीभगवान् का स्मरण कर उन्हें प्राप्त कर सकते हैं; श्रीभगवान् का श्रवण-स्मरण प्राणीमात्र के लिए सुगम है।

श्रीभगवान् का उद्घोष है: